

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

दशावतार स्तोत्र



(मीन अवतार)

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम् ।

विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ।

केशव ! धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥1॥

प्रलय के समय आपने बिना परिश्रम समुद्र धरण के लिए नौका की तरह चेष्टित मीन रूप धारण करके वेद शास्त्र की रक्षा की थी। हे मीन रूप धारी भगवान्! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

(कूर्म अवतार)

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे

धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।

केशव ! धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥2॥

हे भगवान्! आपने अपने अति विपुलतर पीठ पर पृथ्वी को धारण किया था, इसी कारण आपके पृष्ठ पर व्रण (घाव) का चिह्न है, हे जगदीश ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

(वराह अवतार)

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना ।

शशिनि कलं(ख)ककलेव निमग्ना ।

केशव ! धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥3॥

हे केशव! आपने सूकर रूप धारण करके प्रलय के जल से पृथ्वी का निज दाँतों से उद्धार किया । इसी कारण आपके दाँतों में प्राप्त पृथ्वी कलंक रेखा के सदृश शोभायमान हो रही है। हे जगदीश! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

(नृसिंह अवतार)

तव करकमलवरे नखमद्भुतश्रृंगम् ।

दलितहिरण्यकशिपुतनुभृगम् ।

केशव ! धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥4॥

हे केशव ! आपने नृसिंह रूप धारण किया है। आपके श्रेष्ठ करकमलमें नखरूपी अद्भुत श्रृंग विद्यमान है, जिससे हिरण्यकशिपु के शरीरको आपने ऐसे विदीर्ण कर दिया जैसे भ्रमर पुष्पका विदारण कर देता है, आपकी जय हो ॥4॥

(वामन अवतार)

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन ।

पदनखनीरजनितजनपावन ।

केशव! धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥5॥

हे केशव! आपने वामन रूप धारण करके बलि को छला था और आप ही ने अपने चरण कमलों से निकले हुए जल से समस्त लोगों को पवित्र किया था। हे भक्त जन रक्षक! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

(परशुराम अवतार)

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम् ।

स्रपयसि पयसि शमितभवतापम् ।

केशव ! धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥6॥

हे परशुराम रूप धारण करने वाले भगवान् ! आपने परशुराम रूप धारण कर कठोर आत्मा क्षत्रियों का विनाश करके उन्हीं के रुधिर से पृथ्वी को तृप्त किया था। हे जगदीश ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

(राम अवतार)

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम् ।

दशमुखमौलिबलिं(म्) रमणीयम् ।

केशव ! धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥7॥

हे श्रीहरे ! आपने समस्त लोगों पर दया करने के हेतु राम रूप धारण करके सभी देवताओं को प्रसन्न करने हेतु राक्षसराज रावण का संहार किया था, हे भगवान्! आपकी जय हो, जय हो, जय हो ॥7॥

(बलराम अवतार)

वहसि वपुषि विषदे वसनं(ञ) जलदाभम् ।

हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ।

केशव! धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥8॥

हे भगवान्! आपने हलधर रूप धारण करके मेघ सदृश नील वस्त्र को धारण किया , तब आपके शुभांग में वह नीलवसन हलभीता यमुना का स्वरूप शोभायमान हुआ था । हे जगदीश ! आपकी जय हो ,जय हो, जय हो।

(बुद्ध अवतार)

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।

सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ।

केशव ! धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥9॥

हे जगदीश्वर! आपने ही जीवों पर दया करने हेतु बुद्ध रूप धारण करके पृथ्वी में जितने यज्ञ पशु हिंसा प्रधान हुआ करते थे उनकी निंदा की। हे बुद्धरूपधारी भगवान्!आपकी जय हो , जय हो जय हो ॥9॥

(कल्कि अवतार)

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् ।

धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।

केशव! धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥10॥

हे श्रीहरे ! आपने दुष्ट म्लेच्छों के नाश हेतु धूमकेतु स्वरूप खड्ग धारण किया था । हे कल्कि रूप भगवान् ! आपकी जय हो, जय हो जय हो ॥10॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् ।

शृणु सुखदं(म्) शुभदं(म्) भवसारम् ।

केशव ! धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥11॥

श्री जयदेव रचित यह स्तोत्र सब स्तोत्रों में श्रेष्ठ है। हे भक्तगण ! इसको भक्तिभाव युक्त प्रीतिपूर्वक आनंद से श्रवण करो ।हे दस अवतारों को धारण करने वाले भक्तजन दयालु ! आपकी जय हो, जय हो ,जय हो।